International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-06-2021, Accepted: 03-07-2021, Published: 21-07-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 32-34

समय, समाज और जीवन यथार्थ से निर्मित नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं

डॉ. सरला शर्मा[1], सुश्री चंद्रलेखा पुरोहित[2]
[1] सह आचार्य, हिंदी विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोधार्थी, हिंदी विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
प्रगतिवाद के वृहतत्रयी कहे जाने वाले नागार्जुन, त्रिलोचन व केदार की कविताएं समय, समाज और जीवन यथार्थ से गहनता से जुडी हैं। वे धरती और मिट्टी से उपजे कवि है इसलिए वे जीवन की विसंगतियों के प्रति बहुत ही सजग दिखाई देते हैं। उनके लिए समाज व सामाजिक चेतना महत्वपूर्ण हैं। वे उसी से प्रेरित और पोषित हुए है। और यह सत्य है कि एक कविता की सबसे बडी ताकत जीवन की सच्चाईयों की ईमानदार अभिव्यक्ति में ही निहित होती है क्योंकि अपने समय, समाज और जीवन यथार्थ से संस्कारित कविता ही लोक को आश्वस्त कर सकती हैं।

मूलशब्द: प्रगतिवाद, समाज, सामाजिक यथार्थ, जनतांत्रिक चेतना, जन–संवेदना।

प्रस्तावना

प्रगतिवाद, साहित्य की एक बहुत ही महत्वपूर्ण काव्यधारा हैं। यह सही है कि छायावादी काव्य ने यदि एक ओर द्विवेदी युगीन अभिधात्मकता के विरोध में सांकेतिकता, भाषा व कल्पना के धरातल पर काव्य को गरिमा प्रदान की तो दूसरी ओर व्यक्ति, प्रकृति और प्रेयसी नारी को,व्यक्ति के भीतरी संसार को तथा उसके अस्तित्व के प्रश्न को भी काव्य का विषय बनाया किन्तु तत्कालीन समय, जन साधारण के जीवन और समाज के यथार्थ को वे नहीं देख पाएं। पंत की 'ग्राम्या','युगवाणी' से नये यथार्थ की चेतना को स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता हैं। निराला ने आगे चलकर 'कुकुरमुत्ता' व 'नये पत्ते'के माध्यम से प्रगतिवादी काव्य दृष्टि को मजबूती प्रदान की। प्रगतिवाद के वृहतत्रयी कहे जाने वाले नागार्जुन, त्रिलोचन व केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं समय, समाज और जीवन यथार्थ के अधिक निकट दृष्टिगोचर होती हैं। एक कविता की सबसे बडी ताकत जीवन की सच्चाईयों की ईमानदार अभिव्यक्ति में ही निहित होती हैं क्योंकि अपने समय, समाज व जीवन यथार्थ से संस्कारित कविता ही लोक को आश्वस्त कर सकती है एवं उन्हें भरोसे के योग्य बनाती हैं। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार जीवन के मार्मिक प्रसंगों की पहचान ही किसी कवि के श्रेष्ठ होने के प्रमाण हैं। प्रगतिवादी कवि आत्मा, परमात्मा सृष्टि जन्मान्तर इत्यादि में विश्वास नहीं करता,वह ईश्वरीय जीवन,नियति, ब्रह्मवाद व अध्यात्मवाद को साहित्य का लक्ष्य नहीं मानता और न ही व्यक्ति की स्वतंत्रता में विश्वास रखता हैं बल्कि वह तमाम रूढियों,सामाजिक ढकोसलों इत्यादि का विरोध करते हुए मानव की महत्ता प्रतिपादित करता हैं।

नागार्जुन, त्रिलोचन व केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं समाज के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करती है। नागार्जुन की कविता जनता की कविता हैं। हिंदी में अनेक कवि हुए जो जनता व जनतांत्रिक चेतना के पक्षधर हैं किंतु नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हुए जिन्होंने जनता की जनतांत्रिक कार्यवाही का चित्रण अपनी कविता में किया। ऐसा कहा जाता है कि नागार्जुन ने कविता में जन कविता की एक नवीन कोटि विकसित की जिसका प्रारंभ भारतेंदु से होता हैं। कवि नागार्जून स्वयं जीवन संघर्ष में अकेले ही झुझते हुए तीव्र आक्रोश एवं उग्र क्रोध से कटु हो गये फिर भी अपनी वैयक्तिकता को आधार बना कर स्वदेश एवं स्वदेश वासियों की अनुभूति को विभिन्न आकृति दे सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान कर अपनी काव्य कला को ऊँचाई देने में सफल हुए है। जब नागार्जुन का साहित्यिक जीवन प्रारंभ हुआ तब देश अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा पाने का प्रयास कर रहा था। आर्थिक रूप से देश जर्जर स्थिति में था और साहित्य में छायावादी कविता की जगह प्रगतिशील कविता ले रहीं थीं। जनता ने ये उम्मीदें बांध रखी थी कि आजादी के बाद उनके दु:ख–दर्द दूर होगें परंतु उनकी उम्मीदें धरी कि धरी रह गयी। जातिप्रथा,शोषण, गरीबी एवं अशिक्षा ने अभी भी हमारा दामन नहीं छोडा था।यहीं विषय नागार्जुन की पृष्ठभूमि रहा। उन्होंने अपने समय में उत्पन्न सभी हलचलों,समस्याओं एवं परिस्थितियों का सुक्ष्म अध्ययन किया है। वह खूब जानते है कि दलित वर्ग अभावों की चक्की में किस तरह पिस रहा है;भारतीय किसान किन–किन कठिनाईयों में डुबा है;यहां का मजदूर किस प्रकार शोषण का शिकार बन रहा है;श्रमिक दिनभर कडी मेहनत के बावजूद भरपेट रोटी का जुगाड नहीं कर सकता;गरीबों की गरीबी सूरसा के मूँह की तरह बढती जा रही है;उच्च वर्ग वैभव एवं वित्त विलास के पालने में झूल रहा है और नौकरशाह दूसरों की कमाई को उडा रहा है;कवि इन उपर्युक्त सम्पूर्ण परिस्थितियों को अपनी नंगी आंखो से देखता है। वे जहां जीवन और समाज के नये लक्षणों से प्रेरित हुए वहीं त्रिलोचन ऐसी व्यवस्था के खिलाफ है जिसमें व्यक्ति की उपेक्षा की जाती है। वे इस व्यवस्था के बीच छटपटाने वाले मानव को जागरण के लिए प्रेरित करते हुए उसकी मूक्ति की कामना भी करते है–

> ''अब कुछ ऐसी हवा चली हैं।
> जिसमें सुप्त जगत जागा है।''

त्रिलोचन अपनी धरती और मिट्टी से उपजे पीडा के कवि हैं और लोक से उनका गहरा जुडाव है। उनकी कविताओं में जनपद की माटी की सोंधी महक,लोक तत्व और ग्राम्य जीवन सहज रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उनकी कविता ग्रामीण कारीगर,खेत–मजदूर और किसान स्त्रियों के उद्धार और चेतना की बात करती हैं। वह अपनी मिट्टी की परंपरा से कुछ लेती है,वहीं सामाजिक रूढियों,परम्पराओं पर तीखा प्रहार करती हैं। इनकी कविता के संदर्भ में मुक्तिबोध लिखते है–''उसमें

चीख–पुकार या अट्टाहास का आलोडन नहीं हैं.....कवि की प्रगतिशीलता अट्टाहासपूर्ण आन्तरिक क्षतिपूर्ति के रूप में नहीं आई है वरन् कवि के अपने जीवन–संघर्ष मंज घिसकर तैयार हुई हैं। त्रिलोचन का मानना है कि प्राचीन मान्यताएं और विश्वास जर्जर एवं रूढिग्रस्त है। वे समाज के विकास को अवरूद्ध कर रहें हैं। अतः नवीन संस्कृति एवं समाज के निर्माण हेतु उन्हें तोडना आवश्यक हैं

रूमानी आदर्शवाद से यथार्थवाद तक,रूपासक्ति से जीवनासक्ति तक और कोमल रागात्मकता से खुरदरे वस्तुचित्रण तक केदार की कविता के अनेक रंग हैं।उनकी कविताओं में प्रेम,सौंदर्य,प्रकृति के गहरे लगाव के साथ जनसाधारण के संघर्षशील जीवन,कठिन श्रम और दृढ वैचारिक आस्था का स्वाभाविक चित्रण हमें देखने को मिलता हैं। केदारजी की कविताओं में मानवता और संसार के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती हैं। उनकी रचनाओं का कथ्य इतना विशाल है कि वह जीवन और यथार्थ के सुदूर तलों का स्पर्श करती हैं। वे जीवन की विसंगतियों के प्रति बहुत ही सजग दिखाई देते हैं।उनके अनुसार जातीय परंपरा,अंधविश्वास व रूढियां व्यक्ति को नियतिवादी बना देती हैं। वे भाग्य के भरोसे अपना वास्तविक व्यक्तित्व खो बैठते हैं। उन्होंने स्पष्ट तौर पर अनुभव किया है कि भारतीय समाज मे कौशल क्षमता के स्थान पर जाति–वर्ण पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस कारण कथित निम्न वर्गीय जातियां प्रगति की धारा से जुड नहीं पाई। इस कारण वे समाज में चेतना की ऐसी आग जलाना चाहते हैं जिससे समाज में संवेग पैदा हो और आम आदमी अपनी पीडा को दूर करने का प्रयास करें। मनुष्य होने का अभिमान करें,इसलिए कवि कहता हैः–

'' हार न मानो
और न हारो,जीना जानों
वह जीवन की आन हमारी शान है।'

केदार 'सत्यमेव जयते' जैसी अवधारणा में पूर्ण विश्वास करते थे। इसलिए जनता में व्याप्त निराशा हताशा को दूर करने का सदैव प्रयास करते थे। उन्होंने स्पष्ट तौर पर बताया है समाज में व्याप्त दुष्प्रवृतियों के कारण किसान, मजदूर, छोटे–छोटे लोगों का सत्य पराजित होता रहता है,जो उनको निराशावाद की ओर ले जाता है। यही कारण है भारतीय समाज में नियतिवादी प्रवृति प्राचीन काल से अब तक वैसी ही बनी हुई है। केदारजी ने अपने समय में व्याप्त समाज के इसी यथार्थ का चित्रण पूर्ण बेबाकी से किया है।

समय,समाज और जीवन यथार्थ के सन्दर्भ में तीनों कवियों का मूल्यांकन करने पर हम पाते है कि इनमें विभिन्नता होते हुए भी समानता देखने को मिलती है। नागार्जुन की 'युगधारा','सतरंगे पंखों वाली' संकलनों में जनवादिता है,केदार की ''बसन्ती हवा''उनकी प्रगतिशील कोटि की प्रतिनिधि रचना हैं। त्रिलोचन के ''धरती'' काव्य संग्रह में ग्राम्य जीवन का यथार्थ चित्रण है। तीनों कवि मानवीय संवेदना को समझने वाले कवि है। उनकी कविताएं तत्कालीन समाज व जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करती है। उनके अनुसार यदि समाज में बुराई है, कोढ है,पाप है तो उसे पर्दे से न ढक यथावत् प्रस्तुत करना उचित हैं। तीनों कवियों ने जन–जीवन को देखा और कविताबद्ध किया। समाजिक उन्नति व नव–निर्माण के दौरान उन्होंने रूढियों पर जमकर प्रहार किया।शोषितों–पीडितों के करूण गायक इन कवियों ने एक ओर मानवतावादी भावना का प्रसार किया तो दूसरी ओर शोषक वर्ग के प्रति उपेक्षा भाव भी प्रकट किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार समय, समाज व जीवन यथार्थ से निर्मित नागार्जुन,त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल की कविता पाठक को अंतर तक झकझोर देती है। तीनों कवियों को समग्रता से देखने पर उनकी व्यापकता और विविधता का बोध होता हैं। केदारनाथ अग्रवाल मूलतः रोमानी कवि है जिनमें प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की ऐन्द्रियता है लेकिन जीवन, समाज व तत्कालीन समय में व्याप्त विसंगतियों का सरोकार उनमें अत्यधिक दिखाई देता हैं। इनमें भी खासकर हाशिए पर संघर्षरत किसान व मजदूर प्रमुख हैं। इसलिए नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक साहित्य की प्रवृतियों' में केदार की 'बसंती हवा' की पंक्तियों को उद्धृत किया।उदाहरण के लिए–

''जो जीवन की धुल चाटकर बडा हुआ है,
तुफानों से लडा और फिर खडा हुआ है
जिसने सोने को खोदा, लोहा मोडा है
जो रवि के रथ का घोडा है
वह जन मारे नहीं मरेगा,नहीं मरेगा।''

इस प्रकार उनकी कविता साधारण जन में संवेग उत्पन्न करती है जो उन्हें अत्याचारों के खिलाफ लडने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। वहीं त्रिलोचन ने जीवन यथार्थ को अपना पथ प्रदर्शक बनाया और उसके अंतर्विरोधों के बीच ही उसकी पूर्णता देखने की कोशिश की। उनकी कविताओं की भावभूमि बहुत ही व्यापक हैं। उनकी अनुभूतियों में सच्चाई और गहराई हैं। वे एक हृदय को दूसरे हृदय से भावों के माध्यम से जोड देते थे। उनकी कविता में सामाजिक–राजनीतिक घटनाओं का चित्रण वर्णन कम है,मानव जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है। जीवन यथार्थ को जीते त्रिलोचन का व्यापक काव्यफलक उनके सरल स्वभाव का परिचायक है। वे अपने समकालीन कवियों में सबसे अधिक सरल,सहज व ईमानदार थे । अपनी रचानाओं में जहां एक ओर ये किसान–मजदूर का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते है वहीं दूसरी ओर नेता वर्ग,पुंजीपति वर्ग,जो देश को दोनों हाथों से लुट रहे है, के प्रति विरोध भी इनमें देखने को मिलता हैं। यहीं कारण है कि इनकी कविताओं में समष्टि कल्याण का भाव निहित हैं। वहीं यदि नागार्जुन की बात करें,वे केदार व त्रिलोचन से भिन्न समाज को जिस रूप में देखते है उसी रूप में चित्रित भी करते हैं। उनकी संवेदना कहीं भी दिखावटी नहीं लगती। वे एक श्रमिक के प्रति इतना आदर भाव रखते है कि उनके सामने एक कवि भी कमजोर दिखाई पडता हैं।उनकी कविता का प्रमुख विषय प्रायः मनुष्य समाज का दबा–कुचला वर्ग रहा है।वे उनकी पीडा को आत्मीयता से महसुस करते हैं। उन्होंने सामाजिक समस्याओं का गहनता से अवलोकन किया।वे खुले हृदय से प्रत्येक घटना का अवलोकन कर,उसका विश्लेषण करने के पश्चात् उसे कविता के सांचे में ढाल देते हैं इसलिए वे जनकवि कहलाएं।

सन्दर्भ सूची

1. नागार्जुन का कवि कर्म–खगेन्द्र ठाकुर,सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय
2. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास–गणपति चन्द्र गुप्त,लोकभारती प्रकाशन
3. कहे केदार खरी–खरी–केदारनाथ अग्रवाल,साहित्य भण्डार इलाहाबाद
4. श्रम का सौन्दर्य और केदारनाथ अग्रवाल–मधुछन्दा,परिमल प्रकाशन,इलाहाबाद
5. त्रिलोचन के काव्य में व्यक्त किसान चेतना–प्रमोद कुमार प्रसाद,जे.जे. कॉलेज
6. प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन का विश्लेषण–डॉ श्री मती अनुपमा मिश्रा

7. हिंदी व भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन–रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन
8. त्रिलोचन के बारे में–गोविन्द प्रसाद,वाणी प्रकाशन
9. प्रतिनिधि कविताएं–त्रिलोचन,राजकमल पेपरबैक्स
10. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियां–नामवर सिंह,लोकभारती प्रकाशन`